# विष्णुपुर

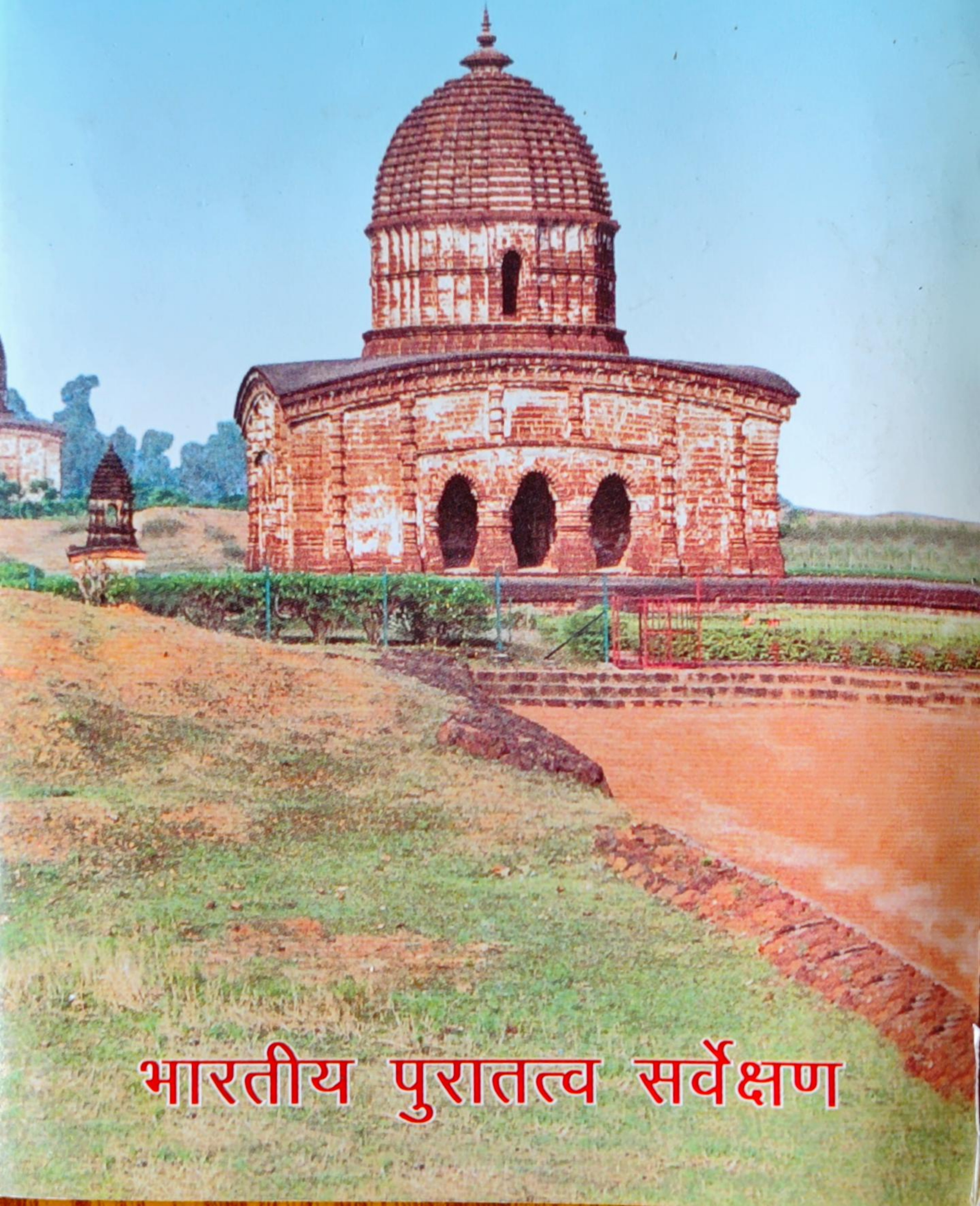

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण

# विष्णुपुर

एस. एस. बिश्वास

प्रत्नकीर्तिमपावृणु

महानिदेशक, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण
नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित
2006

**प्रथम संस्करण 1997**
पुनर्मुद्रित 2006
(5000 प्रतियां)

©

2006
**भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण**
भारत सरकार

मूल्य : रु. ₹65/-

मुद्रक : गोवर्सन्स पब्लिशर्स प्रा. लि., गुलाब हाउस, मायापुरी, नई दिल्ली-64

# प्राक्कथन

यह पुस्तक मूल रूप में अंग्रेजी में लिखी गई 'विष्णुपुर' नामक पुस्तक का हिन्दी अनुवाद है। मैं श्री प्रदुमन कुमार शर्मा, सहायक कुलसचिव, राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान, नई दिल्ली तथा श्री सतीश त्रिपाठी, हिन्दी अनुवादक, इंडियन म्यूजियम, कलकत्ता का आभारी हूँ जिन्होंने इस पुस्तक का हिन्दी अनुवाद किया।

# विषय सूची

पृष्ठ संख्या

1. सामान्य परिचय ... ... 1
2. इतिहास ... ... 5
3. कला और वास्तुकला ... ... 8
   (क) वास्तु कला ... ... 8
   (ख) कला ... ... 10
4. मन्दिर ... ... 11
   (क) मल्लेश्वर मन्दिर ... ... 11
   (ख) जोर बांग्ला या केष्टराय मन्दिर ... 11
   (ग) कालाचांद मन्दिर ... ... 13
   (घ) लालजी मन्दिर ... ... 13
   (ङ) मुरली मोहन मन्दिर ... ... 14
   (च) मदन मोहन मन्दिर ... ... 14
   (छ) जोर मन्दिर : मन्दिरों का समूह ... 15
   (ज) राधा-गोविन्द मन्दिर ... ... 16
   (झ) राधा-माधव मन्दिर ... ... 16
   (ञ) राधा श्याम मन्दिर ... ... 17
   (ट) नंद लाल मन्दिर ... ... 17

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| (ठ) | पाटपुर मन्दिर | ... | ... | 18 |
| (ड) | श्याम राय मन्दिर | ... | ... | 18 |
| (ढ) | मदन गोपाल मन्दिर | ... | ... | 20 |
| (ण) | श्रीधर मन्दिर | ... | ... | 21 |
| (त) | राधा विनोद मन्दिर | ... | ... | 21 |
| (थ) | राधा-रमण मन्दिर | ... | ... | 22 |
| (द) | रासमंच | ... | ... | 22 |
| (ध) | बाँध | ... | ... | 23 |
| ग्रन्थ-सूची | | ... | ... | 24 |

# फलक सूची


1. जोर बांग्ला या केष्ट राय मन्दिर : सामान्य दृश्य
2. जोर बांग्ला या केष्ट राय मन्दिर : दक्षिण द्वार
3. जोर बांग्ला या केष्ट राय मन्दिर : कृष्णलीला का एक दृश्य
4. जोर बांग्ला या केष्टराय मन्दिर : कृष्णलीला दृश्य
5. मदन मोहन मन्दिर : सामान्य दृश्य
6. मदन मोहन मन्दिर : मेहराब पर अंकित आकृतियों का विवरण
7. मदन मोहन मन्दिर : कृष्ण लीला में प्रदर्शित हंसों का दृश्य
8. जोर मन्दिर समूह एवं राधा गोविन्द मन्दिर
9. राधा श्याम मन्दिर : सामान्य दृश्य
10. नंदलाल मन्दिर : अनन्तशायिन विष्णु
11. श्याम राय मन्दिर : सामान्य दृश्य
12. श्याम राय मन्दिर का प्रवेश द्वार
14. श्याम राय मन्दिर : रास मण्डल
15. श्याम राय मन्दिर : कृष्ण लीला एवं विष्णु अवतारों का दृश्य
16. श्याम राय मन्दिर : युद्ध का दृश्य

# विष्णुपुर

## 1. सामान्य परिचय

**विष्णुपुर ( अक्षांश 23° 45' उत्तर तथा देशान्तर 87° 19' पूर्व )** पश्चिम बंगाल जिले का एक तहसील मुख्यालय, अनेक सुन्दर मन्दिरों के लिये प्रसिद्ध है जहां पर मध्यकालीन बंगाली मन्दिरों की वास्तुकला के रचना सम्बन्धी नमूने लगभग सभी आकार एवं प्रकारों में अभिव्यक्त हैं। अपनी प्रतिष्ठा के चरमोत्कर्षकाल में विष्णुपुर मल्लभूम नाम के एक बड़े क्षेत्र की राजधानी हुआ करती थी जिसके अन्तर्गत बांकुरा जिले के सम्पूर्ण भू-भाग के अतिरिक्त मिदनापुर एवं वर्धमान जिलों के विस्तृत क्षेत्र भी शामिल थे। आज भी यह क्षेत्र लोक कलाओं जैसे पक्की मिट्टी (टेराकोटा) एवं धातु की मूर्तियों, रेशम और सूत (कॉटन) की बुनाई के जीवन्त केन्द्रों के रूप में प्रसिद्ध हैं और साथ ही यहां विष्णुपुर घराना के नाम से प्रसिद्ध शास्त्रीय संगीत की एक क्षेत्रीय शैली भी संरक्षित है। यद्यपि किसी समय बहुत से मन्दिर ध्वस्त होने के कगार पर थे किन्तु भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा लगातार संरक्षित किये जाने से इनमें से अधिकांश स्थिर अवस्था में आ गये हैं। अभी हाल में इनकी सजावट हेतु की गई प्रकाश व्यवस्था

के कारण ये स्मारक पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र बन गये हैं। जल से भरे हुए बड़े-बड़े तालाबों जिन्हें बांध कहा जाता है, के किनारे चलते हुए पर्यटक मन्दिरों की भव्यता का दृश्य देखते हैं जिनमें से कुछ (मन्दिरों) की दीवारों पर चरमोत्कर्ष को उपलब्ध बंगाल की मृण्मूर्तिकला की एक झलक देखने को मिलती हैं।

दक्षिण-पूर्व रेलवे के अन्तर्गत, हावड़ा-चक्रधरपुर भाग में, विष्णुपुर कलकत्ता से 200 कि.मी. दूर है। यहां बस द्वारा भी पहुँचा जा सकता है। बस मार्ग से 152 कि.मी. की यह दूरी कलकत्ता से नियमित बस सेवा द्वारा तय की जा सकती है। पश्चिम बंगाल सरकार के पर्यटन विभाग का एक पर्यटक आवास यात्रियों हेतु बनाया गया है। क्षेत्रीय नगर पालिका द्वारा संचालित एक अतिथि गृह है और शहर में कुछ संख्या में होटल भी हैं।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग ने विष्णुपुर के बारे में अंग्रेजी और बंगला में एक फोल्डर और पिक्चर पोस्ट कार्ड का एक सेट प्रकाशित किया है। विष्णुपुर के विषय में विस्तृत सूचना अधीक्षण पुरातत्वविद्, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, कलकत्ता सर्किल, एम.एस.ओ., बिल्डिंग, चतुर्थ तल, ब्लाक डी. एफ. साल्टलेक सिटी, कलकत्ता- 700064 और कालाचांद मन्दिर समूह में स्थित सर्वेक्षण के क्षेत्रीय कार्यालय में उपलब्ध है। यह प्रकाशन विष्णुपुर के मन्दिरों के विषय में संक्षिप्त विवरण, अलग-अलग ढांचों की आकृतियों और विशिष्ट लक्षणों को उजागर करते हुए उनकी शैलीगत भिन्नता और पक्की मिट्टी (टेराकोटा) के अलंकरण आदि की सूचना देता है जो कि निश्चय ही प्रशंसनीय है। बांधों के किनारे चलते हुए दर्शक बांधों के समीप मन्दिरों के उन्नत शिखरों और बांधों के शान्त जल में पड़ रहे उनके प्रतिबिम्बों को देखकर अभिभूत हो जाते हैं। इन स्थापत्य नमूनों में पिरामिड के आकार के 'रासमंच' नामक एक विलक्षण

नमूने का विशेष रूप से उल्लेख किया जा सकता है। पंचरत्न शैली में निर्मित श्याम राय मन्दिर को सभी मन्दिरों में सर्वोत्कृष्ट माना जा सकता है। किले के निकटवर्ती क्षेत्र में कई अन्य मन्दिर स्थित हैं जैसे जोर बांग्ला, राधाश्याम, लालजी, कृष्ण-बलराम, निकुंज बिहार और केसरराय। शेष अधिकांश मन्दिर जैसे कालाचांद, राधा-माधव,. राधा-गोविन्द, जोर मन्दिर, नन्दलाल, एक बड़े तालाब जिसे लाल बांध कहा जाता है, के दक्षिण-पश्चिम किनारे पर स्थित हैं। दूसरे क्षेत्र में, किले के उत्तरी तरफ, मदन-मोहन, मुरली मोहन, चिन्मयी, मदन गोपाल और मल्लेश्वर मन्दिर स्थित हैं जबकि किले के दक्षिण ओर अपनी पूरी भव्यता के साथ रासमंच अकेला खड़ा है। इन मन्दिरों में अधिकांश जैसे कालाचांद, लालजी, मदनगोपाल, राधागोविन्द, राधाश्याम और नन्दलाल लेटराइट पत्थर से निर्मित है और शेष ईंटों से बनाए गए हैं। आकृति, ढांचे और शिखरों की संख्या को ध्यान में रखते हुए इन मन्दिरों को पाँच भिन्न प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है। इनमें से मल्लेश्वर (अपने मूल रूप में) कृष्ण-बलराम, निकुंज बिहारी और केसर राय मन्दिर "शिखर शैली" के अंतर्गत आते हैं जबकि शेष एक, पाँच या नौ शिखरों से युक्त बंगाली 'रत्न प्रकार' के हैं। पूरे पश्चिम बंगाल में विष्णुपुर ही मात्र एक स्थल है जहाँ विविधता के साथ अनेकों शैलियों के मन्दिर एक जगह पर पाये जा सकते हैं।

विष्णुपुर के पर्यटक /दर्शक खिलौने बनाने और बुनकारी के स्थानीय केन्द्रों को भी देख सकते हैं। यहां कुछ अन्य रूचिपूर्ण स्थल हैं जो प्रसिद्ध संगीतकार जादूभट्ट और संस्कृत के गणमान्य विद्वानों की स्मृति से जुड़े हैं। पर्यटकों के लिये यहाँ से कुछ अन्य महत्वपूर्ण स्मारकों का देखना सुगम हो सकता है जो कि विष्णुपुर से ज्यादा दूर नही है जैसे ब्रहुलारा में स्थित सिद्धेश्वर महादेव का मन्दिर, सोनतोपल में भग्नावस्था में पड़ा ईंटों से बना

मन्दिर, पत्थरों से निर्मित दिहार के सादेश्वर एवं शैलेश्वर मन्दिर, बांकुरा के रास्ते पर एकतेश्वर में स्थित पत्थरों से निर्मित मन्दिर। ये स्मारक मध्यकालीन बंगाल के परम्परागत मन्दिर स्थापत्य का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

इसके अतिरिक्त विष्णुपुर में कुछ तोपें भी हैं जिन पर प्राचीन समय के मल्ल राजाओं के सैन्य पराक्रम के साक्ष्य अंकित हैं। इनमें सबसे बड़ी तोप 'दलमादल' एक ऊँचे चबूतरे पर पूरी गरिमा से प्रतिस्थापित है।

## 2. इतिहास

एक ही जगह पर एकत्रित अनेकों महत्वपूर्ण मन्दिरों और बड़े तालावों से युक्त विष्णुपूर (फलक 17) आज भी प्राचीन पारम्परिक बंगाली शहर के उस स्वरूप को धारण किए है जो सत्ता और कीर्ति के समय के वैभव और ऐश्वर्य का साक्षी है। मल्ल इस क्षेत्र, जिसे उनके नाम के आधार पर मल्लभूमि कहा जा सकता था, पर बहुत लम्बे समय से शासन करते आ रहे थे जैसाकि इन राजाओं की तिथि गणना, जिसे मल्ल युग के रूप में 695 ई० में शुरू किया गया था, से स्पष्ट होता है। पुराने क्षत्रिय परिवार का वंशज रघुनाथ, जो अपनी शारीरिक शक्ति द्वारा पहलवानों में प्रथम था, ने आदि मल्ल की उपाधि धारण की और राज्य का संस्थापक बना। बीर हम्बीर, जो मल्ल राजाओं में सर्वाधिक प्रसिद्ध हुआ, के समय विष्णुपुर ने ख्याति अर्जित की। प्रारम्भ में बीर हम्बीर एक क्रुर और निर्दयी शासक था परन्तु बाद में श्री निवास, जो श्री चैतन्य के अनुयायी और ख्याति प्राप्त विद्वान थे, के द्वारा वैष्णव धर्म में दीक्षित होने के बाद वह एक सभ्य और बिनम्र शासक के रूप में बदल गया। बीर हम्बीर ने एक स्वतन्त्र राजा के रूप में शासन किया। ऐसा माना जाता है कि उसने मदन मोहन की पूजा की शुरूआत की थी और शहर के मध्य में पिरामिड के आकार का एक विशाल एवम् विलक्षण भवन बनवाया था जिसे 'रास मंच' नाम दिया। 'उत्सव' के अवसर पर निकटवर्ती मन्दिरों से अनन्य मूर्तियों को यहां पर एकत्र किया जाता है। बीर हम्बीर के पुत्र एवम् उत्तराधिकारी ने एक अनियंत्रित घोड़े पर सवारी करने के दुःसाहसी कार्य से मुगल सूबेदार शाह शुजा से सिंह की उपाधि प्राप्त की थी।

रघुनाथ के समय विष्णुपुर ने संस्कृत की शिक्षा और शास्त्रीय संगीत के एक केन्द्र के रूप में काफी यश प्राप्त किया। श्याम राय, जोर बांग्ला और कालाचांद जैसे प्रसिद्ध मन्दिर इसी समय बने। रघुनाथ के बाद 1656 ई० में उसका पुत्र बीर सिंह गद्दी पर बैठा। अपनी राजधानी की सुरक्षा हेतु बीर सिंह ने विष्णुपुर में एक किले का निर्माण कराया जिसके भग्नावशेष शांरवारिपाड़ा नामक क्षेत्र में आज भी मौजूद है। उसे आठ बहुत बड़े तालाबों, जिन्हें बांध कहा जाता है, बनवाने का भी श्रेय प्राप्त है। इन तालाबों ने विष्णुपुर की प्राकृतिक शोभा को बनने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अपने क्षेत्र में सात मन्दिरों का निर्माण कराकर उसने मन्दिर निर्माणकर्ता के रूप में अपनी पहचान बनाई। विष्णुपुर का लालजी मन्दिर 'एक रत्न' शैली की सुन्दर रचना है। बीर सिंह की दो पत्निओं- शीरमणि और चूड़ामणि, ने दो अन्य मन्दिरों मदन गोपाल और मुरली मोहन (1665 ई०) का निर्माण कराया। यद्यपि बीर सिंह एक प्रसिद्ध निर्माणकर्ता था फिर भी उसने अपने आठ पुत्रों को किसी अज्ञात कारण से जीवित दीवार में चुनवा दिया था इन पुत्रों में से दुर्जन सिंह का जीवन किसी तरह बचा लिया गया जो बाद में बीर सिंह का उत्तराधिकारी बना। दुर्जन सिंह के विषय में इतना ही ज्ञात है कि उन्होंने 1694 ई० में मदन मोहन मन्दिर का निर्माण करवाया था। मदन मोहन मल्ल परिवार के इष्ट देवता थे।

दुर्जन सिंह के बाद उनका पुत्र रघुनाथ सिंह द्वितीय गद्दी पर बैठा उसके शासनकाल में विष्णुपुर में संगीत परम्परा ने बहुत प्रगति की। रघुनाथ सिंह लाल बाई नामक एक अति सुन्दर मुस्लिम युवती के प्रेम में पड़ गया। इस लगाव ने रघुनाथ सिंह को राजकीय कर्तव्यों के प्रति पूर्णरूपेण विमुख कर दिया और उसने प्रजा को इस्लाम धर्म में दीक्षित होने के लिए उकसाया। इन अनियमितताओं से प्रत्येक व्यक्ति उसके विरोध में खड़ा हो गया। राजा

की प्रथम विवाहित पत्नी ने किसी तरह राजा की हत्या करवाकर इस प्रकार की गतिविधियों को रोकने में सफलता प्राप्त की। वह स्वयं भी अपने पति की चिता में जल कर सती हो गई। तब से वह 'पतिघातिनी सती' के रूप में विख्यात हुई अर्थात् ऐसी सती जिसने अपने ही पति की हत्या की थी। रघुनाथ की मृत्यु के उपरान्त लाल बाई ने निकटवर्ती तालाब में प्रवेश कर जल समाधि ले ली जिसके कारण उस तालाब का नाम 'लाल बांध' पड़ा।

रघुनाथ की मृत्यु के साथ विष्णुपुर के बुरे दिन और उसके पतन की शुरुआत हो गई। एक ओर मराठों ने आक्रमण कर दिया और दूसरी ओर बर्धमान के महत्वाकांक्षी जमींदार अंगड़ाई लेने लगे। रघुनाथ सिंह का उत्तराधिकारी गोपाल सिंह वैष्णव सम्प्रदाय का अनन्य भक्त हो गया था। किंवदन्ती है कि एक बार मराठों ने विष्णुपुर पर हमला किया तो गोपाल सिंह ने अपनी प्रजा को किले के भीतर छिपाकर मदन मोहन की प्रार्थना की और उनसे किले की रक्षा करने का निवेदन किया, इसके फलस्वरूप यह माना जाता है कि वहां एक चमत्कार हुआ। दलमादल नामक प्रसिद्ध तोप स्वयं चलने लगी। ये गोले मराठा फौज पर बरसने लगे जिससे बाध्य होकर उन्हें विष्णुपुर का घेरा छोड़ना पड़ा। कहा तो यह भी जाता है कि मल्लों के देवता मदन मोहन ने स्वयं उस तोप को, मराठा फौज को भगाने और विष्णुपुर को बचाने के लिये, चलाया था।

गोपाल सिंह के बाद कृष्ण सिंह तथा कृष्ण सिंह के बाद चैतन्य सिंह उत्तराधिकारी बना। चैतन्य सिंह के शासनकाल में मल्ल परिवार को दुर्दिनों का सामना करना पड़ा। 1805 ई० में भूमिकर बकाया होने के कारण ईस्ट इंडिया कंपनी ने इस रियासत को नीलाम कर दिया जिसे बर्धमान के जमींदारों ने खरीद लिया। इसी के साथ मल्ल परम्परा के यश और विष्णुपुर के स्वर्णिम दिनों को ग्रहण लग गया।

# 3. कला और वास्तुकला

**यद्यपि विष्णुपुर ने अपनी राजशक्ति और गौरव को खो दिया है** तब भी वहां के मौजूदा शहर में तब के बने शानदार मन्दिरों और टेराकोटा अलंकरण के कारण यह अपने अतीत का गौरव संजोकर रखने में काफी हद तक सफल है।

विष्णुपुर में करीब 30 मन्दिर हैं जो पूरी तरह संरक्षित हैं। इनमें 20 मंदिरों का उचित रखरखाव भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण करता है। इस पुस्तिका में इन्हीं 20 मंदिरों के बारे में जानकारी दी जायेगी।

## (क) वास्तुकला

शैली और बनावट की दृष्टि से विष्णुपुर के मंदिरों को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है– 'देउल', 'चाला' और 'रत्न शैली' के मन्दिर। इन मन्दिरों के अलावा शुरूआती दौर में निर्मित विष्णुपुर का एक पुराना स्मारक बीर हम्बीर का 'रासमंच' अपनी अद्भुत बनावट के कारण अद्वितीय है। 'देउल' प्रकार के मंदिरों में उत्तर भारत के नागर शैली की तरह ऊंचा शिखर होता है। इस तरह के मंदिर उड़ीसा, मध्यप्रदेश और उत्तर भारत के अनेक भागों में तो पाये गये हैं किन्तु बंगाल में इनकी संख्या कम है। बांकुड़ा जिले में इस तरह के सिर्फ दो मन्दिर हैं– एक बहुलरा में और दूसरा सोनातोपल में। दोनों ही भव्य एवं आकर्षक हैं।

जोर बांग्ला या केष्ट राय मन्दिर : सामान्य दृश्य

फलक 2

जोर बांगला या केष्ट राय मन्दिर : दक्षिण द्वार

फलक 3

जोर बांगला या केष्ट राय मन्दिर : कृष्ण लीला का एक दृश्य

फलक 4

जोर बांग्ला या केष्ट राय मन्दिर : कृष्ण लीला दृश्य

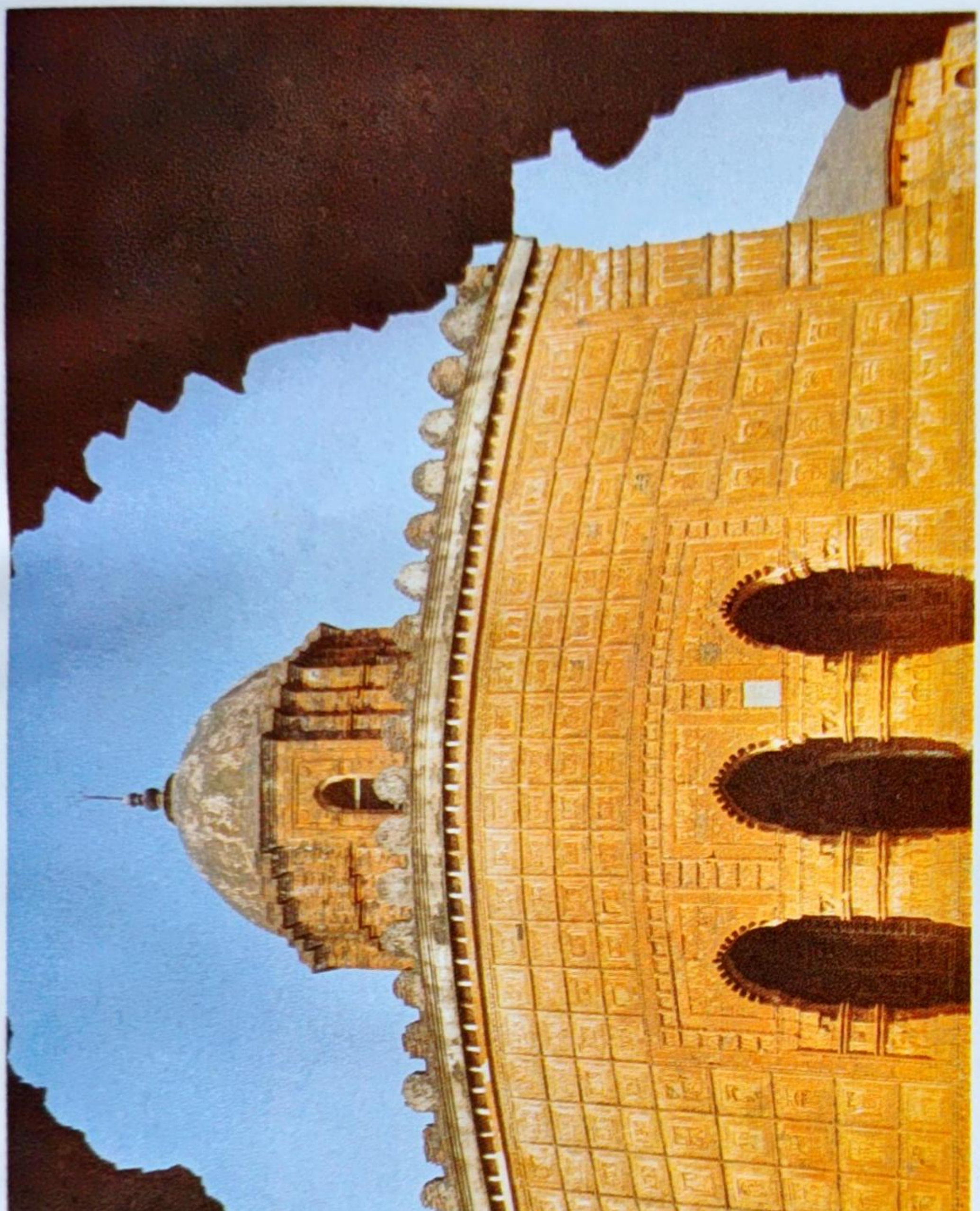

मदन मोहन मन्दिर : सामान्य दृश्य

फलक 6

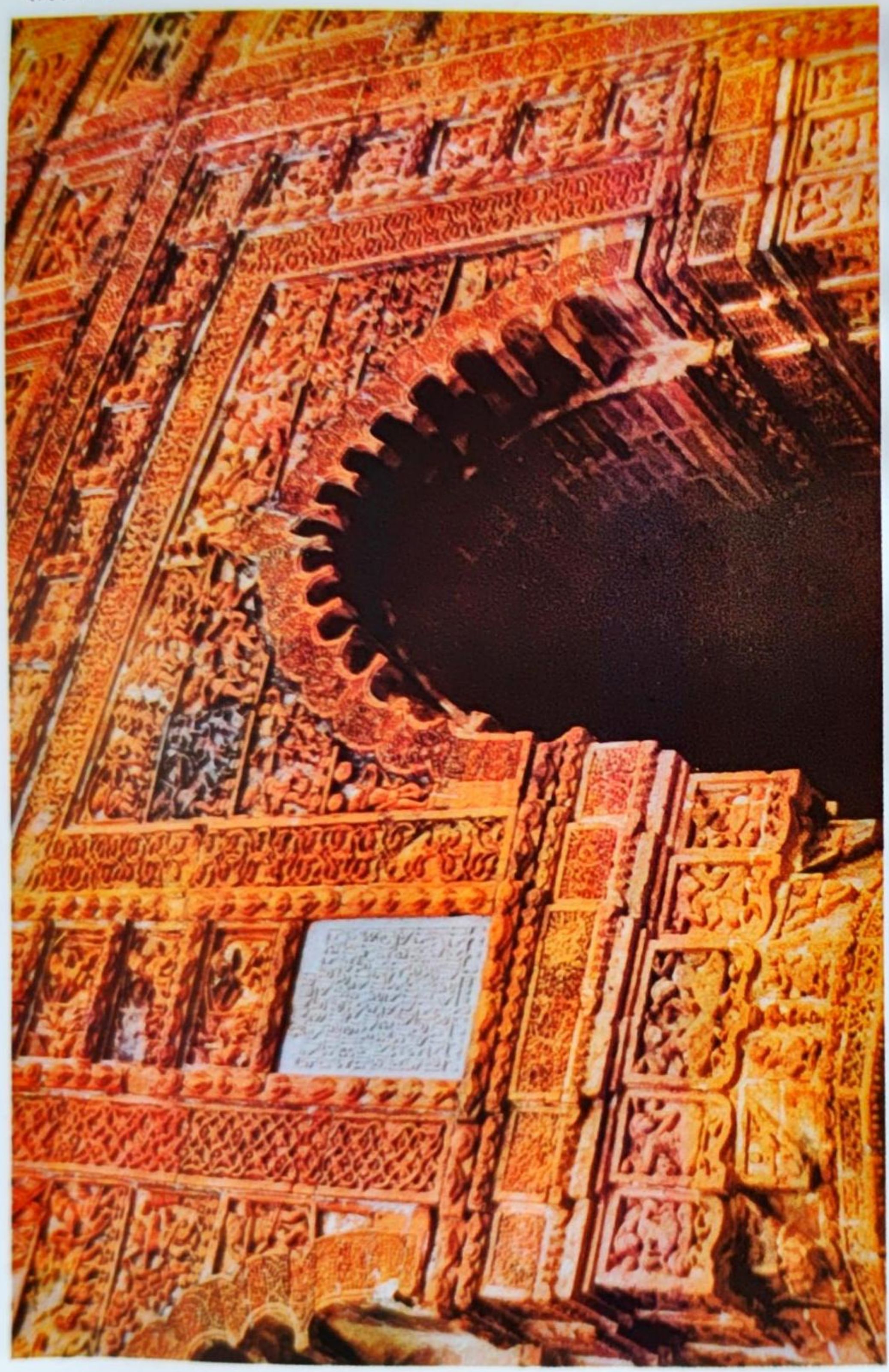

मदन मोहन मन्दिर : मेहराब पर अंकित आकृतियों का विवरण

फलक 7

मदन मोहन मन्दिर : कृष्ण लीला में प्रदर्शित हंसों का दृश्य

फलक 8

जोर मन्दिर समूह एवं राधा गोविन्द मन्दिर

फलक 9

राधा श्याम मन्दिर : सामान्य दृश्य

फलक 10

राधा श्याम मन्दिर : अनन्तशायिन विष्णु

फलक 11

नंदलाल मन्दिर : सामान्य दृश्य

फलक 12

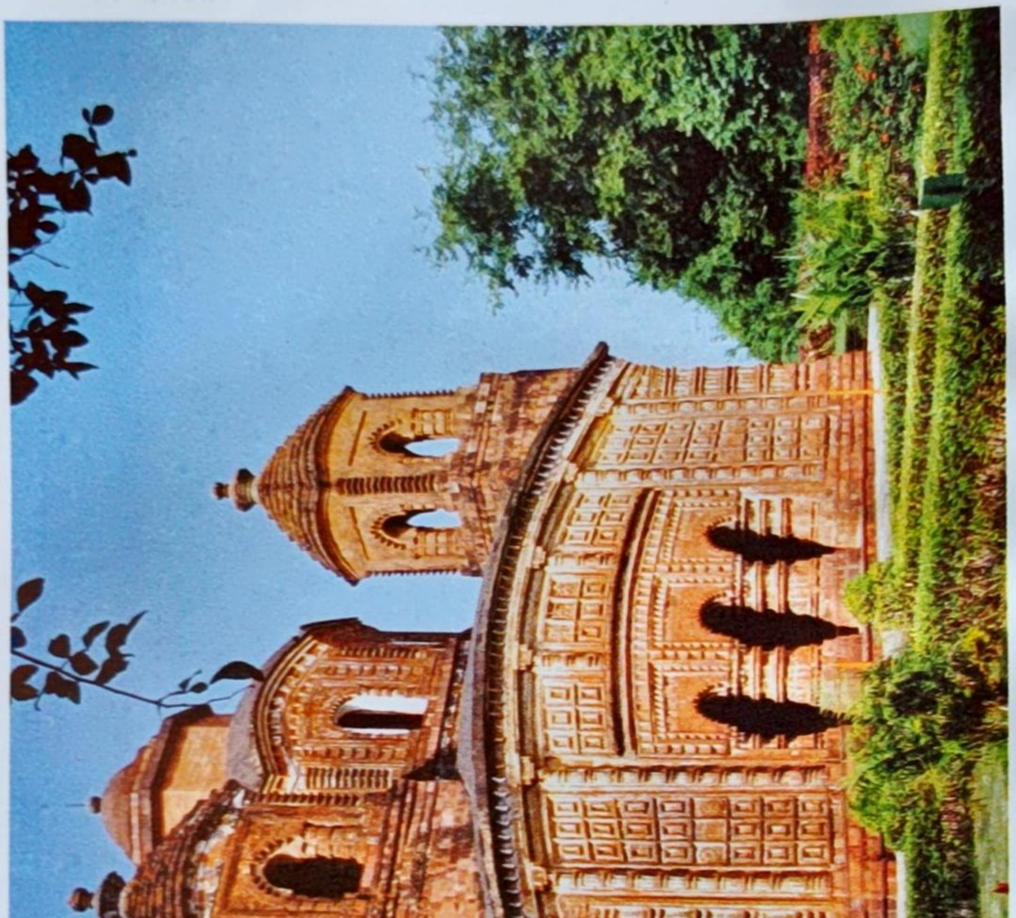

श्याम राय मंदिर : सामान्य दृश्य

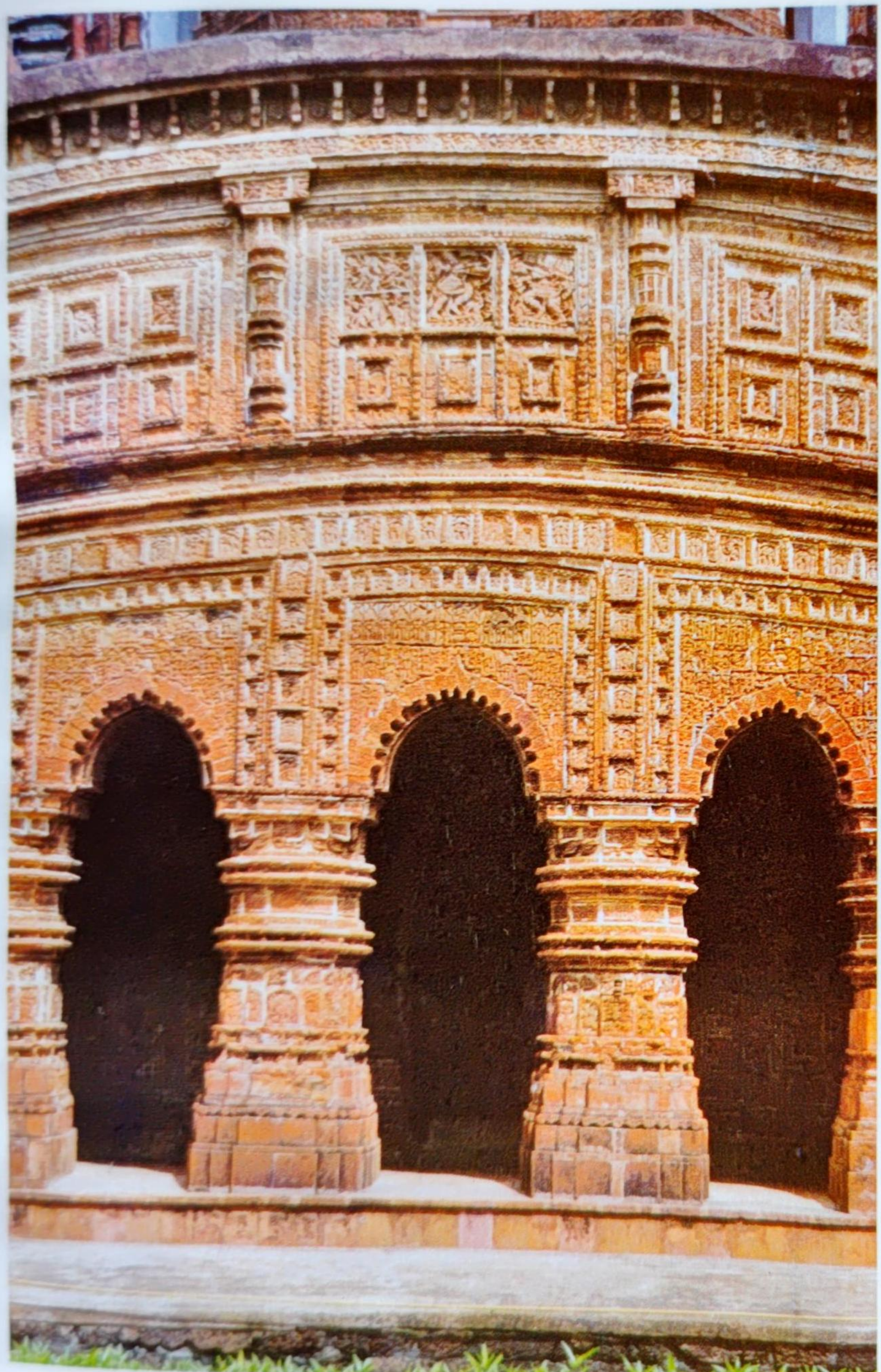

श्याम राय मन्दिर का प्रवेश द्वार

फलक 14

श्याम राय मन्दिर : रास मण्डल

फलक 15

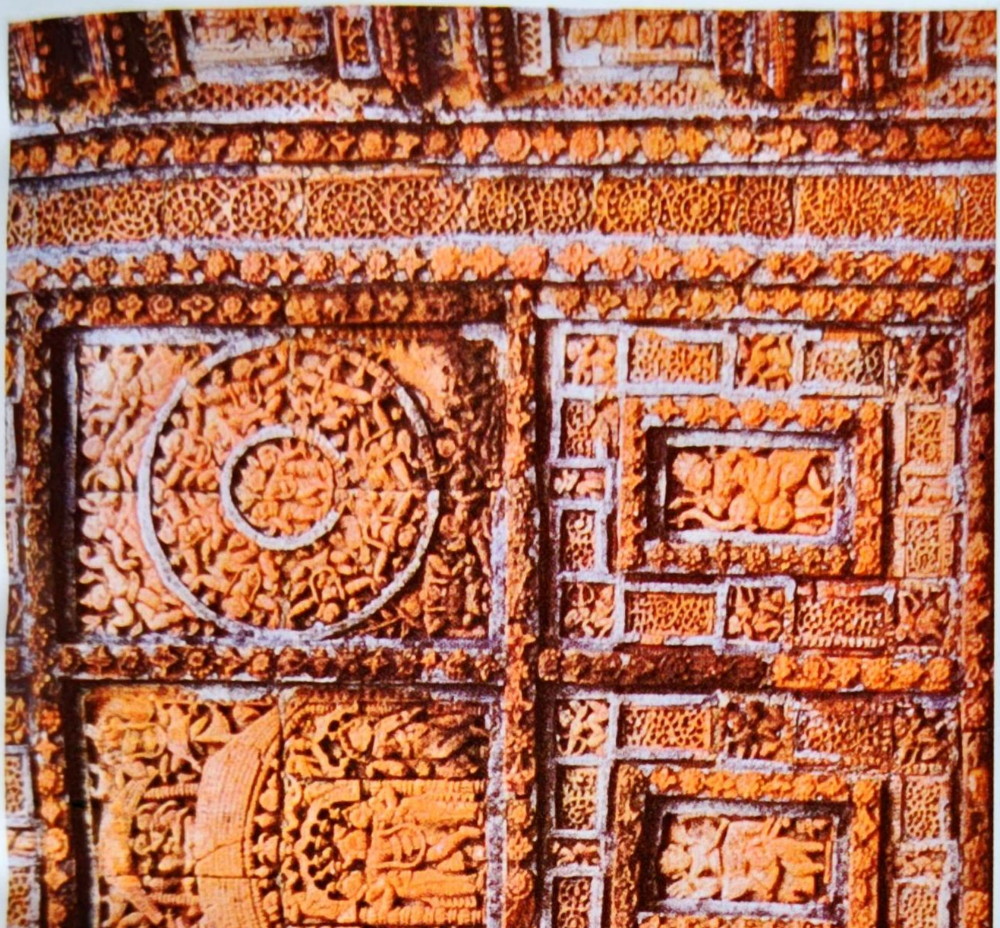

श्याम राय मन्दिर : कृष्ण लीला एवं विष्णु के अवतारों का दृश्य

फलक 16

श्याम राय मन्दिर : युद्ध का दृश्य

विष्णुपुर में 'देउल' प्रकार के मन्दिरों की संख्या काफी कम है। इनमें से अधिकांश जीर्णावस्था में हैं। लेटेराइट पत्थर से निर्मित मल्लेश्वर मन्दिर का शिखर 'देउल' प्रकार का था किन्तु अनेक बार मरम्मत और पुनर्निर्माण किए जाने के फलस्वरूप इसका मूल रूप पूरी तरह से विनष्ट हो गया है। तीन अन्य मन्दिर–कृष्ण–बलराम, केसर राय और निकुंज बिहारी–किले के क्षेत्र में अवस्थित हैं। ये सभी आमतौर से 'देउल' मन्दिर शैली में है। बाकी सभी मन्दिर मध्ययुगीन बंगाल की एक विशेष स्थापत्य शैली के अनुरूप निर्मित हैं। इसे "बांग्ला शैली" कहा जाता है। इन मन्दिरों की मूल अवधारणा गांव की झोपड़ी पर आधारित थी। यह चौकोर या आयताकार है। इसकी छतें दोनों तरफ या फिर चारों तरफ से ढालू हैं। जो मन्दिर चारों तरफ से ढालू होते हैं उन्हें 'चाला' कहा जाता है। जब एक 'चार चाला' के ऊपर दूसरा 'चार चाला' बैठाया जाता है उस अवस्था में यह 'आठ चाला' हो जाता है। चाला शैली के मन्दिरों के अतिरिक्त 'शिखर शैली' के मन्दिर भी बनाये गए । इसकी चोटी पर अवस्थित रहता है–'आमलक कलश'। आमलक कलश को ही 'रत्न' कहा जाता है और इन मन्दिरों को 'रत्न मन्दिर'। जिन मन्दिरों के चाला के ऊपर एक ही रत्न होता है उसे 'एक रत्न मन्दिर' कहते हैं। बीच में एक बड़ा रत्न और तीन चार कोनों में चार छोटे–छोटे रत्न होने से उस मन्दिर को 'पंच रत्न' कहा जाता है। एक तल के ऊपर द्वितल चाला बना कर एक तल के चार कोने में चार और द्वितल के शिखर पर चार कोने में चार और चोटी के केन्द्र स्थल पर एक रत्न रहने से 'नौरत्न मंदिर' कहे जाते है। बीर हम्बीर द्वारा निर्मित रासमंच अपने आप में एक अलग प्रकार का स्मारक है। इसका गठन इस प्रकार है–चारों तरफ आलेनुमा खम्भों के ऊपर खड़े हुए चौकोर प्रकोष्ठ और शिखर पिरामिड की आकृति लेते हुए अंत में जाकर गुम्बद के आकार का

हो जाता है। पूरे बंगाल में इस तरह के मन्दिर स्थापत्य का दूसरा नमूना नहीं मिलता।

## ( ख ) कला

विष्णुपुर के मन्दिर देखने में बहुत सुन्दर हैं। खुले आसमान में ढलुऐ छतों से उभरता हुआ शिखर एक अलौकिक सौन्दर्य का सृजन करता है। वास्तुकला की दृष्टि से वहां के मन्दिर अद्वितीय तो हैं ही साथ ही इतने अलंकृत हैं कि मन्दिरों की शिल्प शोभा देखते ही बनती है। इसके विशाल स्तम्भों, खिलान और दीवारों के ऊपर व्यापक साज-सज्जा की गई है। इस अलंकरण को दो भागों में बांटा जा सकता है। प्रथम वर्ग में वे पैनल आते हैं जिनपर फूल पत्तियां, पशु पक्षी तथा ज्यामितीय अलंकरण है। यहां नन्हे-नन्हें मन्दिरों को भी डिजाइन के रूप में पैनल के अन्दर अलंकृत किया है। दूसरे तरह के अलंकरणों में रामायण और कृष्ण लीला जैसी पौराणिक कहानियों के दृश्य हैं। इन पैनलों के अतिरिक्त कुछ मानव मूर्तियां, तत्कालीन सामाजिक जीवन, दैनंदिन जीवनधारा पर आधारित दृश्य, शिकार के दृश्य, घुड़सवारी, बैलगाड़ी और पालकी के दृश्य भी अंकित हैं। रघुनाथ सिंह द्वारा निर्मित कृष्ण और राधा को समर्पित- 'श्यामराय' मन्दिर पंचरत्न शैली का है। इस मन्दिर की दीवारों में अलंकृत मूर्तियां अदभुत हैं। आठचाला 'खरबांग्ला मंदिर' की बाहरी दीवारें अलंकृत हैं जबकि मदन मोहन की भीतरी दीवारें। केवल श्याम राय मन्दिर ही ऐसा है जिसकी 'बाहरी दीवारें, भीतरी दीवारें, छत सभी पूर्णरूप से और बहुत ही कलात्मक ढंग से सज्जित हैं।

# 4. मन्दिर

**बंगाल में एक स्वतन्त्र मन्दिर शैली विकसित हुई जिस पर कुछ** हद तक उत्तर भारतीय प्रभाव था। विष्णुपुर के मन्दिर अधिकांशत: इसी बंगाल शैली में बनाये गये हैं। यहां कुछ 'देउल' प्रकार के मन्दिर भी हैं जिससे साबित होता है कि बंगाल के स्थपित विविध शैलियों के मन्दिर बनाने में दक्ष थे।

## (क) मल्लेश्वर मन्दिर

देउल मन्दिर श्रृंखला में सबसे पुराना मन्दिर मलेश्वर का है जिसे 1622 ई० में रघुनाथ सिंह ने बनवा कर शिव को अर्पित किया था। यह वर्गाकार है, प्रत्येक ओर की लम्बाई 6.9 मीटर और ऊंचाई 10.7 मीटर है। शुरू में मन्दिर के ऊपर ''रेखा शिखर'' था बाद में इसके स्थान पर एक ''अष्टभुजी शिखर'' लगा दिया गया। तीन अन्य मन्दिर भी जिनपर शिखर लगा था ये हैं कृष्ण-बलराम, केसर राय तथा निकुंज बिहारी मन्दिर। तीनों मन्दिर अब जीर्ण शीर्ण हैं।

## (ख) जोर बांग्ला या केष्ट राय मन्दिर

एक अन्य श्रेणी है जोर बांग्ला मन्दिरों की। विष्णुपुर में दो ऐसे मन्दिर हैं। इनमें से एक का नाम केष्ट राय है और दूसरे का महाप्रभु। केष्ट राय मन्दिर (फलक-1) अपनी शैली, निर्माण तथा टेराकोटा अलंकरण के

कारण प्रख्यात है। यहां प्राप्त एक लेख से विदित होता है कि इस मन्दिर का निर्माण रघुनाथ सिंह ने 1655 ई० में करवाया था। इस मन्दिर को देखने से ऐसा विदित होता है कि जैसे दो झोपड़ियां आपस में मिला दी गई हों और उन्हें मन्दिर का रूप दे दिया गया हो। इस मन्दिर की छतें ढालू हैं और इनके ऊपर एक चार चाला बुर्ज रखा हुआ है। यह दक्षिणी-मुखी मन्दिर जिस प्लेटफार्म पर खड़ा हुआ है वह 11.8 मीटर लम्बा एवं 11.7 मीटर चौड़ा है (लगभग वर्गाकार)। यह 10.7 मीटर ऊंचा है। तीनों ओर, विशेषकर प्रवेश द्वार में यह मन्दिर टेराकोटा कला से अलंकृत है जो इसे भव्यता प्रदान करती है। मन्दिर के अन्दर किसी प्रकार का अलंकरण नहीं है- एक मात्र अपवाद है श्री चैतन्य की षटभुज (छ० हाथों वाली) मूर्ति। स्टक्को (लुगदी) में बनी इस मूर्ति को एक ऊंचे पेडेस्टल पर, दीवार के सहारे सटाकर, प्रदर्शित किया गया है। अब इस मुर्ति की पूजा नहीं की जाती। दीवारों पर ऊपर से नीचे, दाये से बायें एवं घुमावदार पैनल बनाये गये जिनमें मिट्टी से विविध मूर्तियां, आकृतियां, बेलबूटे उकेरे गये हैं। मन्दिर का प्रवेश द्वार दक्षिण दिशा की ओर है (फलक-2)। प्रवेश हेतु दो पूर्ण अष्टकोणी स्तम्भ तथा दो अर्द्धस्तम्भ (दीवार से सटे हुए) हैं जिनसे तीन अर्द्धवृताकार छोटे-छोटे द्वार बन जाते हैं। चार अष्टकोणीय अर्द्धस्तम्भ नीचे से ऊपर तक पाये जाते हैं। इनके बीच में पैनल है, प्रत्येक पैनल को चार खण्डों में विभाजित किया गया है। प्रवेश द्वार के बीचों-बीच एक चौड़ी उभरी हुई पट्टी बनाई है, यह भी पकी हुई मिट्टी से बनी है और इस में गोल, चौकोर, हीरे के आकार की विविध डिजाइने बनी हैं। इन पैनलों में उकेरे गये दृश्य जितने सुन्दर हैं उतने ही विविध भी। रामायण एवं महाभारत के आख्यान, कृष्ण लीला के प्रसंग (फलक 3-4) किन्नर गन्धर्व की मूर्तियां, शिकार के दृश्य, दैनिक जीवन की झांकी सभी यहां बहुत

सूक्ष्मता, कलात्मकता तथा विविधता से उत्कीर्ण हैं। मूर्तियां एकदम जीवन्त तथा गतिशील है और इनमें समाहित है वहां के मूर्तिकारों की उदान्त कल्पना एवं अलौकिक सृजनशीलता। अपनी वास्तुकता तथा टेराकोटा शिल्प के कारण ही केष्टराय का यह मन्दिर विष्णुपुर में सभी जोर बांग्ला शैली के मन्दिरों में अग्रगण्य स्थान रखता है।

जोर बांग्ला शैली का दूसरा मन्दिर महाप्रभु, भी केष्टराय मन्दिर जैसा ही है पर इस समय यह खंडित अवस्था में है। इसकी निर्माण तिथि 1734-35 ई० मानी गई है जब गोपाल सिंह का शासन था।

## ( ग ) काला चांद मंन्दिर

विष्णुपर के मन्दिरों में सबसे अधिक एकरत्न मंदिर हैं। चौकोर घर के ऊपर ढालू छत पर एक रत्न 'स्थापित किया गया है विष्णुपुर में इस तरह के बारह मन्दिर आज भी मौजूद हैं। इसमें दो मन्दिर ईंट से बने हैं और बाकी लेटराईट पत्थर से। एकरत्न शैली में सबसे प्राचीन "कालाचांद" मंदिर है। यह लेटराईट पत्थर से निर्मित है। लाल बांध से दक्षिण किनारे पर 1656 ई० में रघुनाथ सिंह ने इसका निर्माण करवाया था। यह 11.1 मीटर की माप में बना एक वर्गाकार मन्दिर है। इसकी ऊंचाई 9.2 मीटर है। यह मन्दिर दक्षिणमुखी है जिसके चारों और एक खुला गलियारा है जिसके तीन ओर मेहराबदार दरवाजे हैं। मन्दिर की छत ढलुवा है जिसके ऊपर शिखर प्रारम्भ होता है जो अन्त में एक आमलक के रूप में परिवर्तित हो गया है।

## ( घ ) लाल जी मन्दिर

पत्थर निर्मित एकरत्न शैली के मन्दिरों में लाल जी मन्दिर का एक विशिष्ट स्थान है। यह देखने में बहुत भव्य है। इसका प्रदक्षिणापथ ढका

हुआ है। प्रवेश द्वार के तीन प्रवेशों की बगल में अलंकरण के चिन्ह विद्यमान हैं। यहां प्राप्त लेख से विदित होता है कि इस मन्दिर का निर्माण 1658 ई० में वीर सिंह द्वितीय ने श्री राधिका एवं श्री कृष्ण के लिए किया था। ऊंचे धरातल पर निर्मित इस वर्गाकार मन्दिर की छतें चारों ओर से ढलुआं हैं। सबसे ऊपर एक बुर्ज या शिखर है। मन्दिर की ऊंचाई 12.3 मीटर है। कभी मन्दिर का प्रवेश द्वार पूरी तरह से मिट्टी के काम से सज्जित था पर आज केवल उसके अवशेष ही प्राप्त हैं।

## (ङ) मुरली मनोहर मन्दिर

बंगाल में पाये जाने वाले एकरत्न शैली के मन्दिरों से यह मन्दिर थोड़ा भिन्न है। आमतौर से पाये जाने वाले तीन प्रवेश द्वार यहां नहीं है उसके स्थान पर एक प्रदक्षिणापथ है जो पूरी तरह से ढका हुआ है। यह प्रदक्षिणापथ जगह-जगह बने खम्भों पर स्थित है। गर्भगृह के ऊपर एक बुर्ज है। 10.1 मीटर का वर्गाकार मन्दिर 12.2 मीटर ऊंचा है। इस मन्दिर के ऊपर एक ध्वज है जो 'चूड़ा' के ऊपर निर्मित है। ध्वज को देखने से दूर से ही स्पष्ट हो जाता है कि यह मन्दिर किस देवता को समर्पित है। इस मंदिर का निर्माण वीर सिंह की पत्नी रानी चूड़ामणि देवी ने 1665 ई० में करवाया था।

## (च) मदन मोहन मन्दिर

'एक रत्न' मन्दिरों में 'मदन मोहन मन्दिर' ईंट से निर्मित है (फलक 5)। इसमें प्रतिष्ठित हैं मल्लों के इष्ट देवता मदन मोहन। एक रत्न मन्दिरों में 'मदन मोहन मन्दिर' अनन्य है। 1694 ई० में मल्लराज दुर्जन सिंह ने इस मन्दिर का निर्माण कराया था। 12.2 वर्गाकार दक्षिणमुखी इस मन्दिर की

ऊँचाई 10.7 मीटर है। लेटराईट पत्थर से निर्मित मदन मोहन का यह मन्दिर एक बेदी पर अवस्थित है। टेराकोटा फलक के जरिये मन्दिर की दीवारों में अलंकरण का काम किया गया है। मन्दिर में एक ढका हुआ गलियारा है जिसके पूर्व पश्चिम तथा दक्षिण में द्वार बने हैं। छत ढलुआ है जिसके ऊपर एक बुर्ज यानी रत्न है। प्रवेशद्वार को कृष्णलीला प्रसंगो, नर्तकों एवं वादकों की मंडलियों तथा साधु सन्यासियों की प्रतिमाओं से सजाया गया है। बाकी तीन दिशाओं में मेहराबों के आसपास सुन्दर आकृतियों की संरचना की गई है। पकी मिट्टी के फलकों में तरह-तरह की फूलपत्तियां बनाकर यहां लगाया गया है। जहां से मेहराब शुरू होता है उस हिस्से पर एक युद्ध का अंकन है (फलक 6)। निचले पैनल में पशु पक्षियों की आकृतियां बनी हैं (फलक 7) कृष्णलीला, दशावतार तथा अन्य तमाम पौराणिक आख्यान यहां प्रदर्शित हैं। स्तम्भों पर नर्तकों एवं वादकों की मूर्तियां हैं तो अर्द्धचन्द्राकार मेहराब पर महाभारत संग्राम के कुछ दृश्य हैं। मन्दिर के अन्दरूनी भाग में ड्रेगन जैसे पशुओं का अंक़न हैं।

### (छ) जोर मन्दिरः मन्दिरों का समूह

लाल बांध के काफी नजदीक दो बड़े और एक छोटा मन्दिर स्थित है। सामूहिक रूप से इन सभी मन्दिरों को 'जोर मन्दिर' कहा जाता है। इनका निर्माण गोपाल सिंह ने 1726 ई० में कराया था। दक्षिण और उत्तर के दो मन्दिर बीच के मन्दिर की तुलनां में काफी बड़े हैं। बीच का मन्दिर काफी अलंकृत है। लेटेराइट पत्थर की दीवार में चूना और बालू से निर्मित 'स्टक्कों' की मूर्तियां हैं। इनमें रामायण तथा कृष्ण लीला के दृश्य प्रमुख है। बनावट की दृष्टि से जोर मन्दिर एकरत्न मन्दिर है। उत्तर के मन्दिर में भी अलंकरण के काम हैं। उत्तर का मन्दिर 11.7 मीटर का वर्गाकार है।

इसकी ऊंचाई 12.2 मीटर है। बीच का मन्दिर भी वर्गाकार है जिसकी लम्बाई 7 मीटर और उँचाई 7.6 मीटर है। दक्षिण का वर्गाकार मन्दिर 11.8 मीटर लम्बा और 12.2 मीटर ऊँचा है।

## ( ज ) राधा-गोविन्द मन्दिर

राधा-गोविन्द मन्दिर (फलक 8) भी लाल बांध के नज़दीक स्थित है। यह वर्गाकार है और इसकी माप 12.4 मीटर है। इसकी ढालू छतों के ऊपर एक रत्न है। मन्दिर की ऊंचाई 10.7 मीटर है। गर्भगृह के सामने एक बरामदा है जो तीन तरफ से खुला है। सामने की दीवार और कार्निश के नीचे का भाग अलग-अलग खण्डों से सजाया गया है। इस मन्दिर का निर्माण कृष्ण सिंह ने 1729 ई० में करवाया था।

## ( झ ) राधा-माधव मन्दिर

लाल बांध के दक्षिणी ओर जितने मन्दिर है उसमें राधा-माधव का मन्दिर अन्यतम है। यह एकरत्न मन्दिर है। 1737 ई० में इसका निर्माण वीर सिंह की एक पत्नी शिरमणि ने कराया था। इस वर्गाकार मन्दिर का माप 11.1 मीटर है तथा इसकी ऊचाई 9.2 मीटर। मन्दिर के प्रवेश पथ में तीन खिलान दिए गए हैं। वेदी में पक्षी, पशु और पौराणिक कहानियां उत्कीर्ण है। दीवार की बगल में कार्निश (कंगूरे) के नीचे मूर्तियों की नक्काशी है जो दो पंक्तियों में है। खिलान के बगल और स्तम्भ में विभिन्न प्रकार की मूर्तियों के जरिए अलंकरण किया गया है। अधिकतर अलंकरणों में कृष्ण लीला के दृश्य, दशावतार और लता पत्तों के नमूने हैं। इस मन्दिर परिसर में एक दोचाला मंडप है जो राधा-माधव मन्दिर के पास है। इसे भोग मंडप कहा जाता है। इस भोग मंडप सा दूसरा उदाहरण पूरे विष्णुपुर में नहीं है।

## ( ञ ) राधाश्याम मन्दिर

लाल जी मन्दिर के दक्षिण में स्थित है–राधाश्याम मन्दिर ( फलक 9 )। लेटराईट पत्थर से निर्मित यह मन्दिर दीवार से घिरी चहारदीवारी के बीच खड़ा है। मन्दिर में प्राप्त लेख से ऐसी जानकारी मिलती है कि सन् 1758 ई० में मल्ल राजा चैतन्य सिंह ने इसका निर्माण करवाया था। विष्णुपुर के तिथि अंकित मन्दिरों में यह अन्तिम मन्दिर है। यह मन्दिर लेटराइट पत्थरं से निर्मित जरूर है परन्तु इसमें स्टक्कों की कारीगरी है। वर्गाकार मन्दिर की छतें ढालू है और इसके ऊपर एकरत्न विद्यमान है। दक्षिणमुखी मन्दिर 12.5 मीटर वर्गाकार है तथा इसकी ऊंचाई 10.7 मीटर है। यहां का बुर्ज अन्य मन्दिरों में पाये जाने वाले बुर्ज के भिन्न है। लेटराईट पत्थर की दीवारों पर चूना पलस्तर के द्वारा अत्यधिक सुन्दर कृतियों का सृजन किया गया है। यह अलंकरण 'पंखा' कहलाता है इसमें फूलपत्ती तथा ज्यामितीय डिजाइनें बनाई गई है। कोर्निश के निचले भाग में तथा आसपास की दीवारों पर दो कतारों में अनेक मूर्तियां बनी है। स्टक्कों में निर्मित इन मूर्तियों को वर्गाकार टुकड़ों में सजाकर रखा गया है। ऐसी ही सज्जा तीनों खिलानी का अन्दरूनी भाग भी अलंकृत है। गर्भगृह के सामने की दीवार पर रामायण के दृश्य, अनन्तशायित ( फलक 10 ) विष्णु तथा राधा–कृष्ण की मूर्तियां उत्कीर्ण है। यह मन्दिर बहुत विशाल है। आसपास के तमाम मन्दिरों से जो अब ध्वस्त हो गये है, उनकी मूर्तियों को लाकर इसी मन्दिर के गर्भगृह में रख दिया गया है। कृष्ण–राधा (जिन्हें राधाश्याम कहा जाता है) के विग्रह (मूर्ति) के साथ ही इन सभी देवी–देवताओं की पुजा भी की जाती है।

## ( ट ) नंदलाल मन्दिर

लाल बांध के उत्तरी तरफ दक्षिणमुखी नंदलाल मंदिर ( फलक 11)

स्थित हैं। यह लेटराईट पत्थर से निर्मित है। वर्गाकार मन्दिर की ढालू छतों के शिखर पर है 'एकरत्न'। इस मन्दिर से कोई तिथियुक्त लेख नहीं मिला पर इनकी बनावट और शैली से पता चलता है कि यह मन्दिर सत्रहवीं सदी में निर्मित हुआ होगा। वर्गाकार मन्दिर 10.2 मीटर लम्बा और 9.2 मीटर ऊंचा है। इस मन्दिर में साजसज्जा केवल तीन खिलानी प्रवेश बरामदे तक ही सीमित हैं।

## ( ठ ) पाटपुर मन्दिर

कृष्ण बांध के पूर्वी ओर भी एकरत्न मन्दिर है। लेटराईट पत्थर से निर्मित इसका नाम है – 'पाटपुर मन्दिर'। यहां से कोई लेख नहीं मिला। इसलिए मन्दिर निर्माण की कोई तिथि प्राप्त नहीं होती और न ही इसके निर्माणकर्ता का पता चलता है। मन्दिर की शैली से ऐसा ज्ञात होता है कि यह अठारहवीं सदी के उत्तरार्द्ध में निर्मित किया गया होगा। प्रवेश दरवाज़े के दोनों तरफ एक-एक विष्णु मूर्ति स्थापित है।

## ( ड़ ) श्यामराय मन्दिर

विभिन्न प्रकार के एकरत्न मन्दिरों की चर्चा के उपरान्त अब 'पंचरत्न' प्रकार के मन्दिरों की ओर एक नजर। इसके कुछ उदाहरण विष्णुपुर में मौजूद हैं। पंचरत्न मंन्दिरों में 'श्यामराय मन्दिर' सर्वश्रेष्ठ है (फलक 12)। इसका निर्माण रघुनाथ सिंह ने 1643 ई० में कराया था। अपनी निर्माण शैली तथा अलंकरण दोनों में यह देवालय सर्वश्रेष्ठ है। पूरी तरह से ईंटों द्वारा निर्मित यह मन्दिर बहुत विशाल तथ शानदार है। वर्गाकार इस मन्दिर पर बंगाली चार चाला छतें बनी है। यह वर्गाकार मन्दिर 11.4 मीटर लम्बा है। ऊंचाई 10.7 मीटर है। ढलुवा छत के चार कोनों में चार रत्न शिखर

है। बीच में एक अष्टकोण रत्न है जो आकार में बड़ा है। इसके पांच शिखर है जिसे साधारण तौर पर 'रत्न चूड़ा' कहा जाता है। इसी वजह से इसे 'पंचरत्न मन्दिर' की उपमा दी जाती है। मन्दिर के चारों तरफ एक-एक प्रवेश बरामदा है। जिसमें तीन-तीन खिलान बने हैं (फलक 13)। यह मन्दिर उन्नत किस्म की टेराकोटा नक्काशी के लिए विख्यात है। ये नक्काशी मन्दिरों की पूरी दीवारों में मौजूद है बाहर और भीतर, खिलानों के ऊपर और नीचे, रत्न शिखर के चारों तरफ। मुख्य प्रवेश पथ के सामने एक अभिलेख है जिससे पता चलता है कि इस मन्दिर को श्री राधिका और श्री कृष्ण के लिए निर्मित किया गया था। फूलपत्तों की डिजाइनें तो है हीं पर यहां कृष्ण लीला से सम्बन्धित दृश्यों की भरमार है। गोल पैनल के अन्दर बनाये गए रास मण्डल (फलक 14) तथा कृष्ण जीवन के अन्य दृश्य हर दृष्टि से सुन्दर एवं कलात्मक है (फलक 15)। यहां सामाजिक जीवन के दृश्य भी हैं तथा पौराणिक आख्यान, रामायण-महाभारत के प्रसंग तथा शैव या शाक्त सम्बन्धी कथायें भी। ये सभी गाथायें बहुत विस्तारसे तथा बड़ी कुशलता से चित्रित की गई हैं। प्रमुख पैनलों में रामायण एवं महाभारत की तमाम कथायें अंकित हैं। श्यामराय मन्दिर में प्रवेशद्धार के तीनों तरफ की दीवारों पर जो दृश्य उकेरे गए हैं उन्हें वर्गाकार पैनल के अन्दर बनाया गया है। इन वर्गाकार पैनल को दो-दो के जोड़े में इस प्रकार सजाया गया है कि ये देखने में किसी तस्वीर के फ्रेम जैसे लगते हैं। मेहराब के ऊपर बने हुए पैनल थोड़ा अलग किस्म के हैं। इन पैनल में कृष्ण के जीवन से संबंधित कई दृश्य हैं। स्तम्भों पर राधा कृष्ण तथा अन्य कई स्त्री-पुरुषों, को, विविध कार्यकलाओं जैसे नाचते-गाते दिखाया गया है। मेहराब के ऊपर, गुम्बद के नीचे तथा अन्य स्थलों पर अलग-अलग डिजाईन के पैनल लगाये गए हैं। इन पैनलों में फूलपत्ती, नर्तक-

नर्तकियां, वादक हैं तथा इन सभी के साथ हैं कृष्ण और राधा अपने विविध मनोहारी रुपों में। कार्निश की लम्बी पट्टियों में नर्तक तथा वादकों की मूर्तियां खुदी हुई है। ये मूर्तियां इतनी जीवन्त हैं कि लगता है अभी ही बोल उठेंगी। इस मन्दिर के अन्दर की साज सज्जा अदभुत है। गर्भगृह की छत में तथा उसके ऊपर बने पैवेलियन में तमाम मूर्तियां उत्कीर्ण हैं- ये सभी मूर्तियां नर्तकियों तथा वादिकाओं की हैं जिन्हें एक पंक्ति में गोलाकार रूप में अंकित किया गया है। इसी तरह की कारीगरी दीवारों के भांज में, खिलानों के नीचे और प्रवेश बरामदा की ढालू छतों के नीचे भी है। इसी प्रकार की मूर्तियां कतार बनाकर दीवारों पर भी उकेरी गई हैं साथ ही पशु, पक्षी तथा पूजा-पाठ में तल्लीन भक्तों को बार-बार दुहराकर एक डिजाइन का रूप दे दिया गया है। गर्भगृह की पिछली दीवार में एक गोल फलक है जिसके मध्य में कृष्ण है। दो गोलाकार पंक्तियों में कृष्ण को घेरकर नृत्यरत गोपियों की मूर्तियां हैं। इस फलक और बाहर की दीवारों में रासमंडल का दृश्य सूनिपुण कारीगरी की प्रशंसा पाने का हकदार है। प्रवेश द्वार के बाद भीतरी ओर के दरवाजे और गलियां संकीर्ण हैं। दरवाज़े के ऊपर भी उसी तरह के अलंकरण मिलते हैं जैसे बाहरी खिलानों में हैं। किन्तु दरवाज़े के ऊपर जिस प्रकार के पैनल हैं वे ऊपर के पैनल से भिन्न हैं। प्रवेश पथ के दरवाजे के ऊपर भयंकर युद्ध का अंकन है (फलक 16) हर प्रवेश बरामदे में तीन स्तर के टेराकोटा कार्य हैं जो शिकार दृश्य और ग्राम्य जीवन के विभिन्न दृश्यों का सांगोपांग विवरण देते हैं। ये सभी अलंकरण श्यामराय मन्दिर के अनुपम सौन्दर्य हैं। लोकप्रियता की दृष्टि से श्यामराय मन्दिर विष्णुपुर में ही नहीं बल्कि पूरे बंगाल के दूसरे मंदिरों की तुलना में अद्धितीय है।

## ( ढ ) मदन गोपाल मन्दिर

श्याम राय मन्दिर के बाद मदन गोपाल मन्दिर का उल्लेख किया जा सकता है। यह पंचरत्न मन्दिर की श्रेणी में आता है तथा पूरी तरह से लेटेराइट पत्थर द्वारा निर्मित है। राजा वीर सिंह द्वितीय की पत्नी शिरमणि देवी ने 1665 ई० में इस मन्दिर का निर्माण कराया था। 11.3 मीटर वर्गाकार यह मन्दिर 13.7 मीटर ऊंचा है। ढालू छत के शिखर पर पांच शिखर विद्यमान हैं। लेटेराईट पत्थर से निर्मित विष्णुपुर में यह एक मात्र पंचरत्न मन्दिर है। इसके बीच का रत्न अष्टकोणीय है तथा चारों ओर चार रत्न वर्गाकार हैं उनकी छत 'पीड़ा' शैली की है। मन्दिर लगभग अलंकारहीन है। सिर्फ खिलानों के ऊपर ही कुछ गोलाकार कमल बने हैं। काफी मजबूत एवं विशाल यह मन्दिर विष्णुपुर के अन्य सभी मन्दिरों से भिन्न हैं।

## ( ण ) श्रीधर मन्दिर

विष्णुपुर में जो एक मात्र 'नौरत्न मन्दिर' है उसका नाम है 'श्रीधर मन्दिर'। बसु परिवार के किसी एक व्यक्ति ने इसका निर्माण करवाया था। विष्णुपुर में यही एकमात्र ऐसा मन्दिर है जो मल्ल परिवार द्वारा निर्मित नहीं है। लगभग वर्गाकार इस मन्दिर की लम्बाई 5.3 मी० एवं ऊंचाई 10.4 मीटर है मन्दिर का मुख पूर्व की ओर है और इसके चारों ओर चार प्रवेश बरामदे हैं। इसके दक्षिण, पूर्व और उत्तर की तरफ के प्रवेश बरामदे में तीन-तीन खिलान हैं। पश्चिम का बरामदा खुले आलिंद के समान है। प्रवेश बरामदों की छत ढालू हैं। गर्भगृह की छत समतल है। इसके टेराकोटा पैनलों में रामायण और महाभारत की कहानियां तथा कृष्णलीला के दृश्य हैं। कुछ पैनलों में बंदूकधारी विदेशी सैनिक भी दिखाई पड़ते हैं।

## ( त ) राधा विनोद मन्दिर

विष्णुपुर के खर बांग्ला क्षेत्र में दो आठचाला मन्दिर हैं। इसमें पूर्वमुखी राधा विनोद का मन्दिर अति रोचक है। हालांकि इस आठचाला के ऊपर का सामने वाला भाग पूरी तरह टूट चुका है। विष्णुपुर के आठचाला मन्दिरों में ऊपर और नीचे के चालों का अन्तर इतना संकीर्ण कर दिया गया है कि जो इसे देखते हैं उन्हें यह चार चाला मन्दिर जैसा ही दिखाई पड़ता है। उच्चस्तरीय अलंकार से युक्त इस मन्दिर का निर्माण रघुनाथ सिंह की पत्नी ने 1659 ई० में करवाया था। यह मन्दिर पूर्वमुखी है और एक लगभग वर्गाकार बेदी पर अवस्थित है। इसकी लम्बाई 6.4 मीटर और चौड़ाई 6.2 मीटर है। मन्दिर की ऊंचाई के 10.7 मीटर।

## ( थ ) राधा-रमण मन्दिर

राधा-रमण मन्दिर आठचाला मन्दिर है और खरबांग्ला क्षेत्र में है। ईंट से निर्मित अलंकार विहीन यह मन्दिर अब परिव्यक्त है।

## ( द ) रास मंच

इन मन्दिरों के अतिरिक्त वास्तुशिल्प के अनुपम निदर्शनों में एक है विष्णुपुर का मशहूर रासमंच। पिरामिड की आकृति जैसी छत लिये लेटेराईट पत्थर की वेदी पर ईट से निर्मित यह रासमंच 1600 ई० में बीर हम्बीर के द्वारा बनाया गया था। मूल गर्भगृह तीन ओर से घिरा है। इसमें एक-एक कर तीन आलिंद पथ हैं। इसका शिखर पिरामिड जैसा है। 1.5 मीटर ऊंची एक वर्गाकार वेदी पर यह विराजमान है। यह हर तरफ से 24.5 मीटर लम्बा और 10.7 मीटर ऊंचा है। इसकी छत समतल है। गैलरी के बाहरी भाग में मेहराब के पास, टेराकोटा में कमल की डिजाइन बनाई

गई है। पूर्वी दीवार में नर्तकियों और संगीतकारों की आकृतियां हैं। मल्लकाल में यह रासमंच एक 'केन्द्रीय-स्थल' था। 'रास' के अवसर पर आसपास के मन्दिरों से छोटी-बड़ी विभिन्न प्रकार की मूर्तियां यहां लाकर दर्शकों के लिए रखी जाती थीं। अब इसकी जरूरत नहीं पड़ती। बनावट की दृष्टि से रासमंच अतुलनीय व अपने आप में अकेला है। इस तरह का दूसरा स्मारक पूरे बंगाल ही नहीं बल्कि पूरे भारत में भी नहीं है। इसे विष्णुपुर का गौरव माना जा सकता है।

## (ध) बाँध

विष्णुपुर के शासकों की 'मल्ल' उपाधि और वन से परिपूर्ण विष्णुपुर का क्षेत्र मल्ल शासकों के अधिपत्य में आने के कारण यह क्षेत्र 'मल्लभूमि' के नाम से विख्यात हुआ। मल्लों ने शहर में एक विशाल दुर्ग बनवाया और कई तालाब खुदवाए। इन रांजाओं ने सिर्फ विष्णुपुर में ही नहीं बलिक राज्य के दूसरे भागों में भी मन्दिर बनवाए। विष्णुपुर के तालाबों को बांध कहा जाता है। प्रजा को जलाभाव न हो इसके लिए यहां तालाब खोदे गए थे। इसके अलावा ये बांध दुर्ग की सुरक्षा के काम भी आते थे। अधिकतर बांध मल्ल राजा बीर सिंह ने 1657 ई० से 1677 ई० के बीच खुदवाए थे। इन बांधों के नाम हैं। लाल बांध, कृष्ण बांध, गन्तात बांध, यमुना बांध, कालिंदी बांध, श्याम बांध, पोका बांध (बीर बांध) और चौखान बांध। चौखान बांध में तो अब पानी नहीं है पर दूसरे बांधों में आज भी भरपुर जल मौजूद है। इन बांधों की रचना इस प्रकार की गई थी कि विशाल दुर्ग, राजमहल आदि इन्हीं की परिधि में आ जायें। अधिकतर मन्दिर जैसे कालाचांद मन्दिर, राधा-गोविन्द, नंदलाल एवं राधा-माधव मन्दिर, लाल बांध के दक्षिण ओर अवस्थित हैं और पाटपुर मन्दिर कृष्ण बांध के किनारे।

# ग्रंथ-सूची


1. अमिय कुमार बन्दयोपाध्याय, बांकुड़ा जेलार पुराकीर्ति (बांग्ला), पश्चिम बंगाल लोक निर्माण विभाग, सरस्वती प्रेस लिमिटेड, कलकत्ता, 1971
2. अमिय कुमार बन्दयोपाध्याय, बांकुड़ार मन्दिर (बांग्ला), शिशु साहित्य संसद प्राइवेट लिमिटेड कलकत्ता, 1964
3. अमिय कुमार बनर्जी, वेस्ट बंगाल डिस्टिक्ट गजेटियर- बांकुड़ा, राज्य सम्पादक वेस्ट बंगाल डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, कलकत्ता, 1968
4. तरुणदेव भट्टाचार्या पश्चिम बंग दर्शन-2 (बांग्ला), फर्मा के. एल. एम. प्राइवेट लिमिटेड, कलकत्ता, 1982
5. चित्तरंजन दास गुप्त, बिष्णुपुर मंदिर टेराकोटा, बंगिय साहित्य परिषद, विष्णुपुर शाखा, 1979
6. डेविड़ जे. मैक्टचियन, दि टैम्पल्स आफ बांकुरा डिस्ट्रिक्ट, राइटर्स वर्कशाप, कलकत्ता, 1967
7. डेविड जे. मैक्टचियन, लेट मिडिवल टैम्पल्स, आफ बंगल- ओरिजिन एण्ड क्लासीफिकेशन, दि एशियाटिक सोसाइटी मोनोग्राफ फसीरीज, वाल्युम XX, कलकत्ता, 1972
8. जार्ज मिचैल (एडिटेड), ब्रिक टैम्पल्स आफ बंगल (डेविड मैक्-क्टचियन के अभिलेखों से), प्रिंसृन युनिवर्सिटी- प्रेस, प्रिंस्टन, न्यू जर्सी, 1983
9. एल. एस. एस. ओ मेले, बंगाल डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स- बांकुरा, दि बंगाल सेक्रेटरीएट बुक डिपोट, कलकत्ता, 1908

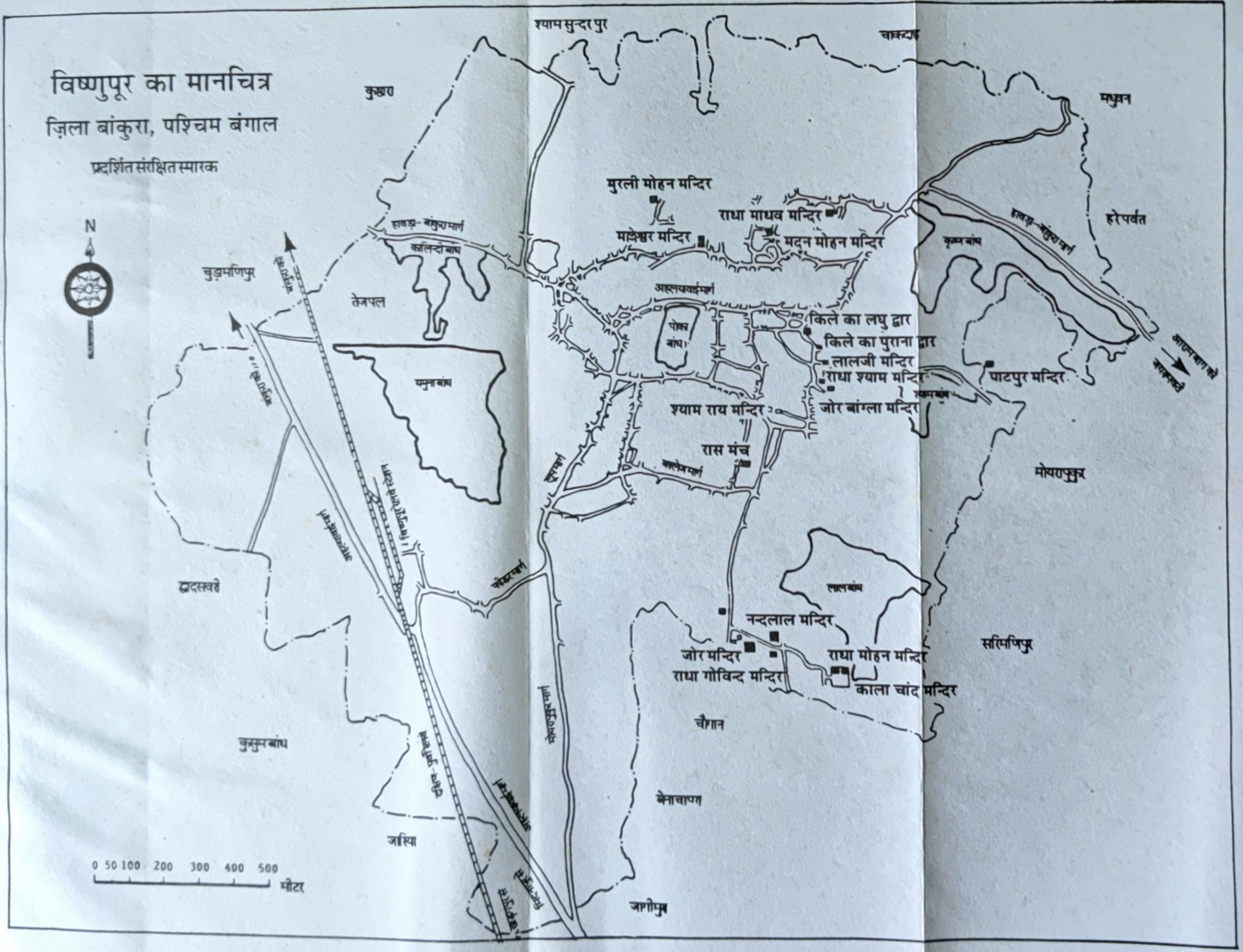
विष्णुपूर का मानचित्र
ज़िला बांकुरा, पश्चिम बंगाल
प्रदर्शित संरक्षित स्मारक
N
कुश्चा
श्याम सुन्दर पुर
चाकदा
मधुबन
हरेपर्वत
चुड़ामणिपुर
तेजपल
मुरली मोहन मन्दिर
राधा माधव मन्दिर
मल्लेश्वर मन्दिर
मदन मोहन मन्दिर
हावड़ा-बांकुरा मार्ग
कालिन्दी बांध
कृष्ण बांध
अहल्याबाई मार्ग
पोकाबांध
किले का लघु द्वार
किले का पुराना द्वार
लालजी मन्दिर
राधा श्याम मन्दिर
पाटपुर मन्दिर
श्याम राय मन्दिर
जोर बांग्ला मन्दिर
रास मंच
मोयणपुकुर
लालबांध
नन्दलाल मन्दिर
जोर मन्दिर
राधा मोहन मन्दिर
राधा गोविन्द मन्दिर
काला चांद मन्दिर
सरिमणिपुर
चौगान
द्वादसवरे
कुसुम बांध
जसिया
बेनाचापण
जागीपुर
0 50 100 200 300 400 500
मीटर